इकाई 6 नारीवादी*

संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 परिचय : नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत का अर्थ

6.2 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की प्रथम लहर

6.3 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की द्वितीय लहर

- 6.3.1 उदारवादी नारीवाद
- 6.3.2 मार्क्सवादी नारीवाद
- 6.3.3 समाजवादी नारीवाद
- 6.3.4 रैडिकल नारीवाद
- 6.3.5 इकोलाजिकल नारीवाद

6.4 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की तृतीय लहर

- 6.4.1 सांस्कृतिक नारीवाद
- 6.4.2 अश्वेत नारीवाद
- 6.4.3 उत्तर आधुनिक नारीवाद

6.5 अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत

6.6 सारांश

6.7 संदर्भ

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के अर्थ और नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के विकास के महत्त्वपूर्ण घटनाक्रमों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे, जैसे नारीवाद और राजनीतिक चिन्तन की प्रथम, द्वितीय और तृतीय लहरें। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपको निम्नलिखित बातों में सक्षम होना चाहिए:

- उस मुख्य विचार को समझना जिसके कारण नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत का विकास हुआ;
- नारीवाद की तीन अलग लहरों के राजनीतिक विचारों के बीच अन्तर का विवेचन;
- नारीवादी चिन्तन के अन्तर्गत उन वैचारिक दृष्टिकोणों की समालोचना करना जो नारीवादी राजनीतिक चिन्तन में नवाचाराएं; और
- नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के अन्तर्गत विभिन्न वाद-विवादों की व्याख्या करना।

6.1 परिचय : नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत का अर्थ

इस इकाई का उद्देश्य नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के अर्थ, उद्‌भव और उसके विकास के प्रक्षेपपथ का पता लगाना है। नारीवाद की प्रथम लहर ने पितृसत्ता की गिरफ्त से महिलाओं की मुक्ति के लिए, एक उपकरण के रूप में, राजनीतिक और कानूनी अधिकारों की

*सुश्री गीतांजली अत्री, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

उपलब्ध पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। नारीवादी की द्वितीय लहर ने पुरुषों के लैंगिक तरीकों के विरुद्ध नारीत्व की राजनीति के क्षेत्र का विस्तार महिलाओं के निजी जीवन तक किया और इस प्रकार उदारवादी नारीवाद मार्क्सवादी नारीवाद, समाजवादी नारीवाद, रैडिकल नारीवाद, और ईकोलॉजिकल नारीवाद (पारिस्थितिक या पर्यावरणीय नारीवाद) जैसी विचारधाराओं के उदय को प्रोत्साहित किया। नारीवाद की तृतीय लहर ने पूर्ववर्ती नारीवादी राजनीतिक रूक्षनों की गतिशील समालोचना प्रस्तुत की जिसे सांस्कृतिक नारीवाद, अश्वेत नारीवाद, और उत्तर आधुनिक नारीवाद, जैसी समावेशी विचारधाराओं के साथ वैश्विक मान्यता मिली। नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत, राजनीतिक सिद्धांत के व्यापक संभाशण का एक उपवर्ग है। यह राजनीतिक सिद्धांत में नारीवादी पहलू को जोडता है जिसे अक्सर उसके उपेक्षित हिस्से के रूप में देखा जाता है। महिलाओं की चिन्ताओं को सम्मिलित करने के द्वारा, यह 'राजनीतिक क्या है' की सामाओं के विस्तार का प्रयास करना है। 'नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत' शब्द की उत्पत्ति बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में पश्चिम के (मुख्यरूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम) महिला मुक्ति आन्दोलन के दौरान हुई। ये परिकल्पना की गई कि पश्चिमी। पाश्चान्य राजनीतिक सिद्धांत ने अपने अधिकांश इतिहास के दौरान महिलाओं की अवहेलना की। इसके विपरीत, नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत ने महिलाओं और उनके अनुभवों को एक निश्चित समय और समाज के राजनीतिक विश्लेषण के लिए आधारभूत माना। इसने एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाया - किसी भी एक निश्चित समाज में महिलाओं की तुलना में केवल पुरुष ही क्यों ताकतवर और विशेष अधिकरों से युक्त है?

यह नारीवादी राजनीतिक चिन्तन के साथ महिलाओं के लिए समान दर्जा कैसे प्राप्त किया जाए इसके लिए निरंतर प्रयास है। एक राजनीतिक आन्दोलन के रूप में, नारीवाद महिलाओं के राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक अधीनता के विरुद्ध है। नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत, उन सिद्धांतों और संस्थाओं की आलोचना और परिर्वतन द्वारा महिलाओं पर प्रभुत्व को समाप्त करने का प्रयास करना है, जो महिलाओं के निम्न दर्जे का समर्थन करते है। परन्तु नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत का विकास एक असमान अभ्यास रहा है जिसमें नारीवादी विचारधारा की विविध लहरों के रूप में परिवर्धन और मतभेद उभरकर आए हैं।

6.2 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की प्रथम लहर

नारीवाद की प्रथम लहर का संबंध नारीवादी गतिविधियों से है जो मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड़ किंगडम में सन् 1820 से लेकर 1840 तक हुई। इस लहर की औपचारिक पहल का श्रेय एलिज़बेथ केडी स्टेंटन द्वारा 1848 में न्यूयॉर्क में रचित "सेनेका फॉल्स डेक्लरेशन", को दिया जाता है। इस उद्घोषणा ने नारीवादी आन्दोलन के लिए नई राजनीतिक रणनीतियों और विचारधाराओं को विशेष रूप से दर्शाया। इसका प्रारंभ महिलाओं के लिए सम्पति के समान अधिकारों और घर – गृहस्थी में एक गरिमामय स्थान के विचार के साथ हुआ। इस प्रकार, इसने महिलाओं के आर्थिक, यौन और प्रजनन के अधिकारों पर ध्यान केन्द्रित किया। परन्तु, बीसवीं सदी के प्रारंभ होने पर, नारीवादी सक्रियतावादियों ने अपना ध्यान महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की ओर मोड़ लिया, विशेष रूप से महिलाओं का मतदान का अधिकार या महिला निर्वाचनाधिकार।

आंदोलन के भीतर कुछ सक्रियतावादियों का विश्वास था कि पुरुषों की तुलना में महिलाएँ नैतिक रूप से श्रेष्ठतर है ''अतः राजनीतिक क्षेत्र में उनकी उपस्थिति राजनीतिक प्रक्रिया के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। परिणामस्वरूप, ब्रिटेन में सन् 1918 में जन प्रतिनिधित्व

अधिनियम पारित किया गया। इसने महिलाओं को मतदान का अधिकार प्रदान किया। परन्तु इसका क्षेत्र सीमित था। क्योंकि ये अधिकार केवल उन महिलाओं को उपलब्ध था, जिनकी आयु 30 वर्ष से ऊपर थी और जिनके पास अपने निजी स्वामित्व वाले घर थे। इस प्रकार नारीवादियों के प्रयास जारी रहे और सम्पति के स्वामित्व की शर्त के बिना, महिलाओं के लिए मतदान के लिए योग्य आयु को घटाकर 21 वर्ष कर दिया गया। परन्तु संयुक्त राज्य अमेरिका में इस लहर का एक अलग राजनीतिक प्रक्षेयपथ रहा यहाँ एलिज़ेबेथ कैडी स्टेंटन, सूजन बी. ऐंटनी, लूसी स्टोन, और लुकीशिया मोट, जैसी नारीवादी नेताओं का मानना था कि महिलाओं के लिए मतदान का अधिकार प्राप्त करने से पहले, दासता या दास प्रथा के उन्मूलन का समर्थन करना अधिक महत्वपूर्ण था। ऐसा माना जाता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका के सभी राज्यों में महिलाओं को मतदान का अधिकार प्रदान करने वाले संविधान के 19वें संशोधन के पारित होने के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रथम लहर धीरे-धीरे समाप्त हो गई। गैर-पाश्चात्य संदर्भ में, महिलाओं के आन्दोलन की पहली अवस्था को उसकी पाश्चात्य समय-सीमा के लगभग समरूप समझा जाता है। फिर भी यहाँ इसकी व्याख्या 19वीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर बीसवीं सदी के पूर्वार्ध तक के उपनिवेशवाद – विरोधी राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की सहभागिता और योगदान के रूप में की जाती है। इन देशों की महिलाओं ने अपने पश्चिमी समकक्षों को एक आदर्श माना और उनके द्वारा की गई आर्थिक, शैक्षणिक और चुनावी अधिकारों की माँगों पर अपनी माँगों को संरचित किया। उदाहरण के लिए भारत में महिलाओं के आन्दोलन की उत्पति को मद्रास में सन् 1917 में इण्डियन विमेन्स एसोसिएशन की स्थापना से जोड़ा जाता है। धनवंथी रामा राव के अनुसार इस संस्था द्वारा नारी मुक्ति के लिए चुने गए कार्यक्षेत्र ठीक वही थे, जिनका तादात्म्य या संबंध पाश्चात्य विश्व में नारीवाद की प्रथम लहर से था जैसे न्यायसंगत उत्तराधिकार कानून, तलाक देने का अधिकार, तथा महिला मताधिकार का विस्तार आदि।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की प्रथम लहर की व्याख्या करें?

.....

.....

.....

.....

.....

6.3 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की द्वितीय लहर

नारीवाद की प्रथम लहर महिलाओं के आन्दोलन के लिए वरदान और अभिशाप दोनों साबित हुई। अपने सकारात्मक पक्ष में इसने सक्रियतावादियों को एक सामान्य उद्देश्य के लिए एकजुट किया और आन्दोलन को उसकी सुव्यवस्थित संरचना प्रदान की। परन्तु मलिाओं के लिए मताधिकार की प्राप्ति के बाद इसे महिलाओं की संपूर्ण मुक्ति के रूप में देखते हुए, कुछ सक्रियतावादी आत्मसंतुष्ट हो गए। सन् 1960 के दशक में नारीवाद की द्वितीय लहर के उदय के बाद जाकर आन्दोलन पुनर्जीवित हुआ विशेष रूप से वर्ष 1963 में बेट्टी फ्रीडन की पुस्तक 'द फेमिनिस्ट मिस्टीक', के प्रकाशन के साथ। इस पुस्तक में फ्रीडन यह ध्यान दिलाती है कि एक माँ और गृहणी की भूमिकाओं में घरेलू कामकाज तक परिसीमित रहने

के कारण महिलाएँ कुष्ठाग्रस्त रही। परिणामस्वरूप, नारीवाद की द्वितीय लहर ने इस तथ्य को स्वीकार किया कि कानूनी और राजनीतिक अधिकारों की उपलब्धि के बावजूद महिलाओं का प्रश्न अनसुलझा रहा। जरमेन ग्रीयर और केट मिल्लेट की कृतियों के प्रकाशन के साथ जो चिन्ता महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों से इससे पहले जुडी थी उसका आमूल परिवर्तन करते हुए, उसमें महिलाओं के उत्पीडन के यौन, मनोवैज्ञानिक और निजी पहलुओं को शामिल किया गया। द्वितीय लहर के दौरान ही कैरल हानिष ने "दी परसनल इज पोलिटिकल" अर्थात "निजी ही राजनीतिक है" का नारा गढ़ा। इसके आधार पर नारीवादी संक्रियतावादियों ने राजनीतिक और सांस्कृतिक असमानताओं के बीच निकट का अन्त संबंध देखा। यह वो समय था जब महिलाओं के निजी जीवन को पितृसत्तात्मक समाज के गहन राजनीतिक सत्ता के ढ़ाँचों के प्रतिबिम्ब के रूप में देखा जाता था। इस प्रकार, पारंपरिक नारीवादियों से भिन्न, इस काल के रैडिकल या उग्र-सुधारवादी) नारीवादियों ने निजी की राजनीति को अपने आन्दोलन के केन्द्र में रखा। परिणामस्वरूप, इस लहर ने 1960 के दशक के उत्तरार्ध में, न्यू जर्सी संयुक्त राज्य अमेरिका का एक राज्य में मिस अमेरिका सौंदर्य प्रतियोगिता, के विरुद्ध प्रदर्शन देखे क्योंकि नारीवादियों द्वारा इसे एक "मवैशी परेड़" या "पशु प्रदर्शन" के सहश देखा गया। उन्होंने ऐसी घटनाओं को महिलाओं के सौंदर्य के विषयीकरण या वस्तुकरण के रूप में देखा।

जहाँ नारीवाद की प्रथम लहर की पहचान विषमलिंगकामी श्वेत महिलाओं के साथ की गई, जिनमें अधिकांश पाश्चात्य मध्यवर्ग से थीं, वहीं द्वितीय लहर ने विकासशील देशों की महिलाओं और अश्वेत महिलाओं को साथ लाने के लिए कठिन परिश्रम किया, जो एकजुटता तथा भगिनीत्व बहनसंघ की विचारधारा पर आधारित था। सिमोन द बोउवार ने 1949 में अपनी कृति 'दी सेकेंड सेक्स' में यह तर्क दिया कि नारीवादी राजनीति की समस्या यह थी कि मज़दूरों और अश्वेतों की तरह न होकर, महिलाएँ "हम" नहीं कहती हैं। महिलाओं के आन्दोलन में एकजुटता के अभाव का पर्यवेक्षण करते हुए, इस तर्क को उन्होंने केन्द्रीय स्थान दिया। इस समस्या से जूझने के लिए यह भविष्यवाणी की गई कि महिलाओं का संघर्ष है, जिसमें महिलाएँ एक सामाजिक वर्ग हैं जिसके मामले में जाति, लिंग और वर्ग, एक साथ मिलकर, पितृसत्तात्मक वर्ग के हाथों उनके उत्पीडन का कारण बनते हैं। उभरता हुआ नारीवादी सिद्धांत, विचार-धाराओं के तीन समूहों के प्रतिच्छेदन की अभिव्यक्ति थी – उदारवादी नारीवाद, मार्क्सवादी नारीवाद और उसका विस्तार जो समाजवादी नारीवाद, के नाम से जाना जाता है, और रैडिकल नारीवाद या उग्र नारीवाद या उग्र-सुधारवादी नारीवाद)। इसके अतिरिक्त, इस लहर के दौरान, नारीवादियों ने महिलाओं को अपने उत्पीडन के लम्बे इतिहास अथवा अपनी जैविक बनावट के कारण पुरुषों की तुलना में अधिक संवेदनशील होने के नाते, सामाजिक समस्याओं के समाधान की दिशा में बेहतर उपागम अपनाते हुए देखा। इस संदर्भ में, परिस्थितिक नारीवाद शब्द को गढ़ा गया यह सूचित करने के लिए कि महिलाओं के रूप में जन्म लेने के नाते महिलाएँ स्वाभाविक पर्यावरणविद् हैं।

6.3.1 उदारवादी नारीवाद

नारीवादी विद्वतत्ता ने अपने राजनीतिक सिद्धांत का विकास सन् 1792 में पहली बार प्रकाशित मैरी वोल्स्टोनक्राफ्ट पथ प्रवर्तक कृति "ए विंडिकेशन आफॅ द राइट्स आफॅ वीमेन" से प्रारंभ की सूचना दी। वोलस्टोनक्राफ्ट, महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए शिक्षा तक समान पहुँच की माँग करती हैं ताकि उत्पीड़क पितृसत्तात्मक परम्पराओं और संस्थाओं का सामना करने में महिलाएँ पुरुषों के समान स्वतंत्र और नैतिक रूप से बलशाली बन सकती हैं। इस प्रकार यह सार्वजनिक क्षेत्र में लैंगिक समानता को सुनिश्चित कर पाएंगी। 19वीं

सदी के आते, उदारवादी नारीवाद का संभाषण, जॉन स्टूअर्ट मिल की कृतियों के माध्यम से स्थानाथरित (बदल दिया) कर दिया गया। मिल ने पुरुषों और महिलाओं के लिए समान आर्थिक अवसरों, राजनीतिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्र के पक्ष में तर्क दिया। इस बात पर बल देते हुए कि महिलाओं के मुक्ति आन्दोलन में राज्य को एक मित्र की भूमिका निभानी चाहिए, उदारवादी नारीवादियों ने सन् 1920 में, संयुक्त राज्य अमेरिका में 19वें संवैधानिक संशोधन द्वारा महिलाओं के लिए मताधिकार सुनिश्चित या उपलब्ध कराया। परन्तु, महिलाओं को पुरुषों के समान बनने की आवश्यकता पर अत्यधिक बल देते हुए उनकी पारम्परिक भूमिकाओं की अवहेलना करने के कारण ड्रसिल्ला कोरनेल, ऐलिजवेथ फॉक्स –जेनोवीस, कैट्रियोता मेकेंजी जेन मैन्सब्रिज, मार्था-सी. नैसबॉम, सूज़न ओकिन और ग्रेगोरी बैशम आदि जैसे उदारवादी नारीवादियों की अक्सर समालोचना होती है।

6.3.2 मार्क्सवादी नारीवाद

मार्क्सवादी नारीवादी अपने उदारवादी प्रतिपक्षों या समकक्षों के सुधारवादी झुकाव या रूझानों का पालन नहीं करते, बल्कि वे महिलाओं के उत्पीडन को पूँजीवाद से संबंधित आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक ढ़ाँचों से जोडते हैं। मार्क्स के लिए, पूँजीवाद पश्चिम का निर्धारक लक्षण है या विशेषता है। मार्क्सवादी नारीवादियों ने अपने आप को 1960 के दशक के उतरार्ध में प्रक्षेपित किया तथा मार्क्स तथा ऐंगिल्स के दर्शनों से प्रधान रूप से अपनी प्रेरणा ली। यद्यपि इन दार्शनिकों ने विशेष रूप से महिलाओं के उत्पीडन का संकेत देने वाली और गहरी संरचनाओं या ढाँचों का गूढ़वाचन (व्याख्या) करने के लिए सशक्त अन्तर्दृष्टि प्रदान की। इस प्रकार, आइरिस मैरियन यंग और ऐलिसन जैगर जैसे मार्क्सवादी नारीवादियों के लिए लैंगिक उत्पीडन वर्ग शोषण पर आधारित है और इसपर भी कि किस प्रकार घरेलू और कार्य स्थलों पर श्रम सामाजिक रूप से पुनरूत्पन्न किया जाता है। उदाहरण के लिए, फ्रेडरिक ऐंगिल्स ने अपनी कृति "दी ऑरिजिन ऑफ फैमिली, प्रॉपर्टी एण्ड द स्टेट" 1884 में यह विस्तारपूर्वक बताया है कि किस प्रकार महिलाओं के यौन और शारीरिक श्रम को शिशु प्रजनन तथा पारिवारिक संस्था के अन्दर उनके पालन पोषण के लिए स्वीकृत माना जाता है। इस सिद्धांत के आधार पर मार्क्सवादी नारीवादियों के अनुसार, पितृसतात्मक बलों के आदेश से महिलाओं के उत्पीडन को स्वाभाविक जताने का प्रयास किया जाता है। ऐंगिल्स इसे "नारी लिंग की अन्तिम पराजय" के रूप में संदर्भित करते हैं और महिलाओं को मुक्त करने के लिए वे समाज की पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध क्रांति की माँग करते हैं। परन्तु, नारीवाद के अन्तर्गत इस दृष्टिकोण की दो आधारों पर समालोचना की जा सकती है। प्रथम, महिलाओं के विरुद्ध काम करने वाले उत्पीडन के अन्य कारकों जैसे सजातीयता, जाति आदि को मान्यता न देने के कारण। द्वितीय, यह महिलाओं के उस वर्ग को अहश्य बना देता है जो वेतन भोगी मज़दूर के रूप में कार्य करती हैं और उन्हें 'वेतन श्रम या मज़दूर' के अधिक व्यापक वर्ग के अन्तर्गत सम्मिलित कर देता है जिसमें संभवत़ पुरुष और महिलाएँ, दोनों शामिल हैं। इस प्रकार इसी वर्ग द्वारा उत्पीडन के तरीकों का जो सामना किया जाता है, उसकी चर्चा नहीं करता।

6.3.3 समाजवादी नारीवाद

मार्क्सवादी नारीवादियों के इस तर्क से जुडते हुए कि पूंजीवाद महिलाओं के विरुद्ध उत्पीडन का मूल कारण है, समाजवादी नारीवादी सता वितरण के पितृसतात्मक प्रबन्ध को इसी स्थिति के सहायक कारण के रूप में स्वीकार करते हैं। समाजवादी नारीवादी आन्दोलन के केन्द्र में यह समझ निहित है कि महिलाओं का उत्पीडन दमन की किसी एक प्रणाली की उपज नहीं है, बल्कि वह लैंगिकता, वर्ग, जाति, सजानीयता और बेशक या बिना संदेह के

लिंग या जैंडर जैसे विविध शक्तियों का सामान्य परिणाम है। इस प्रकार, महिलाओं की मुक्ति को प्राप्त करने के लिए इस आन्दोलन ने इन सभी मुद्दों से सामूहिक रूप से निपटने को अपना लक्ष्य बनाया। फिर भी चुंकि समाजवादी नारीवादियों के लिए आर्थिक उत्पीडन और पितृसता अन्य सभी प्रकार के दमन के आधार हैं, वे यह तर्क देते हैं कि यद्यपि लगभग सभी समाजों में महिलाओं का उत्पीडन होता है, उस उत्पीडन की मात्रा और प्रकृति एक निश्चित समाज की आर्थिक वास्तविकताओं पर निर्भर करती है। बार्बरा एहरेनशइश, सिल्विया वॉलबी शार्लट परकिन्स गिलमेन, डोना हेरवे, एम्मा गोल्डमेन तथा सेल्मा जेम्स आदि जैसे समाजवादी नारीवादी, महिलाओं की इस भूमिका के महत्व पर बल देते हैं जो एक जन्मदाता, शिशु-पालक तथा संसर्गकर्ता, रोगी की देखभाल करने वाले के रूप में अभीक्षक है तथा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में, जो घर से बाहर जाकर अपने श्रम का निवेश करने वाले पुरुषों के लिए घर – गृहस्थी को एक जीने लायक स्थान के रूप में परिणत कर देता है। इनका कहना है कि समाज की पितृसतात्मक प्रकृति के कारण महिलाओं के इस भावपूर्ण श्रम को अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। और यहाँ तक जब महिलाएँ नोकरी बाजार में कार्यरत होती हैं जिसे मार्क्सवादी उत्पादक श्रम कहते हैं, तब भी उन्हें अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में निम्नतर मज़दूरी (या वेतन) तथा यौन उत्पीडन जैसे पक्षपातों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार, समाजवादी नारीवादियों ने एक गरिमापूर्ण जीवन-निर्वाह के लिए न्यायोचित अधिकारों की माँग करने के लिए अपने आपको शिकागो वीमेन्स लिबरेशन यूनियन जैसे महिला संघों ने संगठित किया।

6.3.4 रैडिकल नारीवाद

बेट्टी फ्रीडन जैसे प्रारंभिक रैडिकल नारीवादियों का उद्देश्य अपनी अप्रतिष्ठिता पहचान को पुनः प्राप्त करना था जिसका समाज की सांस्कृतिक बनावट द्वारा क्रमबद्ध तरीके से दमन किया गया था। सन् 60 के दशक के उत्तरार्ध और 70 के दशक के पूर्वार्ध में रैडिकल्स को प्रचंड भौतिकवादियों के रूप में देखा जाता था, जिन्होंने पितृसत्ता के भौतिक आधार पर बल दिया। उदाहरण के लिए; न्यूयॉर्क शहर में स्थित रैडिकल नारीवादी समूह 'द रेडस्टॉकिंग्स' ने यह उपदेश दिया कि एक महिला द्वारा विवाह करने का निर्णय एक भ्रामक मनोभाव के प्रति समर्पण न होकर एक तर्कसंगत रणनीति होनी चाहिए। इसे उपार्जित (प्राप्त) करने के बाद, एक अर्थपूर्ण सामाजिक वर्ग के रूप में, वे "लिंग" या जेंडर का ही उन्मूलन करना चाहते थे। उन्होंने जेंडर को सामाजिक रूप से आविष्कार की गई एक पूर्ण श्रेणी के रूप में देखा जहाँ पुरुषत्व का अर्थ उस 'अन्य" से पूर्णतया प्रतिकूल था – अर्थात नारीत्व परन्तु आधुनिक रैडिकल नारीवादियों ने स्वीकार किया कि लैंगिक अन्तर इन दोनों परिवर्ती कारकों के बीच पारस्परिक क्रियाओं या अन्योन्यक्रियाओं के प्रतिबिम्ब है। उदाहरण के लिए मेरी डेली सूज़न ग्रिफिन जूलिया पेनेलोपी और एड्रिएन रिच जैसे अनेकों ने यह तर्क दिया है कि महिलाएँ पर्यावरण के अधिक निकट होती हैं जबकि पुरुष अपनी लैंगिकता के। यद्यपि अपनी टिप्पणियों में गलती से सामान्य होने के लिए और इस प्रकार के अन्तर (चाहे जैविक हो या सांस्कृतिक) के मूल को पता लगाने में इनके द्वारा प्रयास के अभाव के लिए इनकी समलोचना की जाती है, फिर भी ये नारीवादी इस नैतिक गुण या सद्‌गुण को उत्पीडन के प्रतिनिधित्व के रूप में न देखकर अपने पुरुष समकक्षों से लाभ-प्राप्ति के रूप में देखते हैं। रैडिकल नारीवादियों ने पहले के समाजवादी नारीवाद से हटते हुए अपनी यह राय दी कि उत्पीडन निजी या व्यक्तिगत स्तर पर नही होता और यह आवश्यक नही कि वह हमेशा एक संस्थात्मक परिणाम हो। परन्तु उनका विश्वास था कि इस निजी स्तर पर एक नर होने के नाते मात्र से एक पुरुष को उत्पीड़क या दमनकर्ता नहीं कहा जा सकता है। बल्कि एक नर के रूप में जन्म लेने के नाते वह महिलाओं पर अपने वर्चस्व को जब तर्कसंगत ठहराता है, केवल तब रैडिकल नारीवादियों द्वारा उसके एक उत्पीडक के रूप में देखा जाता है। इस

प्रकार, अन्य उद्देश्यों के साथ जैसे लैंगिक राजनीति का सार्वजनिक संभाषण में शामिल किया जाना, गर्भपात को वैध बनाना, शिशु पालन-पोषण और घरेलू कामकाज के बराबर बंटवारे की माँग करना आदि, के साथ, वे महिलाओं की मुक्ति को अपनी प्राथमिक राजनीतिक कार्यसूची में केन्द्रीय स्थान देते हैं।

6.3.5 इकोलॉजिकल नारीवाद

महिलाओं के उत्पीडन और प्रकृति पर प्रभुत्व का एक दूसरे से संबंध है और दोनों एक दूसरे को परस्पर शुद्ध करते हैं अतः उन्हें सामूहिक रूप से संबोधित किया जाना चाहिए – यह दार्शनिक दृष्टिकोण वर्णक्रम के आर पार ईकोफेमिनिस्टों को एकजुट करता है। अधिकांश ईकोफेमिनिस्टों विद्वता जैसे ऐलिस वॉकर वंदना शिवा इवोन गेबारा, रोज़मेरी रूथर सैली मैकफेग, पौला गन ऐलन, ऐंडी स्मिथ और कैरन वॉरन अन्य, प्रकृति के साथ मानव संबंध के नैतिक आधार पर विचार करती हैं। बीसवीं सदी के उतरार्ध में ईकोलॉजिकल नारीवाद या पारिस्थितिक नारीवाद का उदय पर्यावरण संबंधी और नारीवादी सिद्धांतों के प्रतिच्छेन के साथ हुआ। इस शब्द को सर्वप्रथम 1974 में फ्राँस्वा ओबन द्वारा लिखित पुस्तक "ल फेमिनिज़्म ऊ ला मोर्त" अर्थात नारीवाद या मृत्यु में प्रस्तावित किया गया। ईकोफेमिनिस्ट यह तर्क देते है कि पितृसता पदानुक्रम के द्वैतवादी ढ़ाँचों के माध्यम से समाज में अपने आपको अभिव्यक्त करती हैः संस्कृति बनाम प्रकृति, नर बनाम नारी, भौतिक बनाम भाव, श्वेत बनाम अश्वेत इत्यादि। पितृसत्तात्मक उत्पीडन की व्यवस्थित प्रणाली इन विचरों बाईनरी को आरोपित करते हुए न केवल अपने आपको सुदढ़ बनाती है बल्कि ईकोफेमिनिस्टों के अनुसार, वह विज्ञान और धर्म, दोनों का प्रयोग उपकरणों के रूप में करते हुए, इन्हें पवित्र भी बना देती है। इस प्रकार जब तक किसी भी सामाजिक संरचना के परम आवश्यक या अनिवार्य घटक के रूप में ये द्वैध अवस्थाएँ बनी रहेगी, ये पितृसता को पनपने में मदद करेंगी। इन आधारों पर ईकोफेमिनिस्ट बाईनेरी पदानुक्रमों में संस्कृति के विभाजन की अवज्ञा करते है। उनकी ऐतिहासिक पद्वति पदानुक्रमित द्विविधनाओं के स्थान पर विविधा के अन्तर्गत एक संबंध के अनुपालन का सुझाव देती हैं। यह पद्धति, ऐसी विविधताओं की शक्ति पर बल देने के कारण, एक नारीवादी उपागम है जो पर्यावरण के विचारों को नारीवाद के विचारों से जोडती है। रूथर अपनी 1975 की कृति 'न्यू वुमन न्यू अर्थ' और मेरी डेली 1978 में अपनी कृति 'गाइनइकोलजी' के माध्यम से इस विचारधारा के पथप्रदर्शक बने।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) नारीवाद की द्वितीय लहर की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करें?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.4 नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की तृतीय लहर

नेन्सी फ्रेज़र की पुस्तक 'जस्टिस इंटरप्टस' (1997) के अनुसार सन् 1980 के दशक में पहचान की राजनीति में जेंडर (लैंगिक) के अन्तर पर अधिक बल दिए जाने के कारण भेदभाव के अन्य सीमांतों (सीमाओं) जैसे वर्ग लैंगिकता या सेक्सुएलिटी, सजातीयता और जाति की ओर नारीवादी सक्रियतावादियों का ध्यान अधिक आकर्शित नही हुआ। यह नारीवादियों को आत्म-निरीक्षण की ओर ले गया जिसने उनकी स्थिति या दिशा के पुनर्निधारण का रास्ता तैयार किया। इसके कारण वे नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत को अन्य राजनीतिक संघर्षों के समरूप उच्चरित (करने की दिशा में बढ़े। नारीवादी बुद्धिजीवी वर्ग के बीच इस प्रकार की चेतना की उत्पति के कारण सन् 90 के दशक के मध्य में नारीवाद की तृतीय लहर का उदय हुआ, जो उत्तर आधुनिकवाद और उत्तर औपनिवेशिकवाद की परिस्थितियों द्वारा प्रभावित था। इस लहर में, नारीवाद की दो पूर्व अवस्थाओं में सक्रियतावादियों द्वारा व्यवहार में लाए गए जेंडर, लैंगिकता या सेक्सुएलिटी और हेटेरोनॉर्मेटिविटी के अनेक विचारों को पलट दिया गया। उदाहरण के लिए समकालीन सक्रियतावादियों ने लिपस्टिक, गहरे वक्ष विपाटन वाले वस्त्रों तथा ऊँची एडी के जूतों के फैशनेबल प्रदर्शन को फिर शुरू किया, जिन्हें इससे पहले पितृसत्तात्मक उत्पीड़न के चिन्ह के रूप में किनारे कर दिया जाता था। ऐसा इसलिए था क्योकि युवा सक्रियतावादियों का मानना था कि महिलाओं के पास एक ही समय में पुश-अप ब्रा और बुद्धि दोनों का होना संभव था। उन्होंने अपनी चुनी हुई आत्मपरकताओं के साथ नारीजातीय सौंदर्य के आदर्शों को लिंग-भेद का मानने वाले सेक्सिस्ट पुरुषों के द्वारा दमनपूर्ण विषयीकरण के रूप में न देखा, उन्हें सशक्तीकरण प्रदान करने वाला माना। इसे द्वितीय लहर के नारीवादियों के संभव प्रयासों के द्वारा महिलाओं का व्यवसायिक ओहदा या दर्जा तथा उनकी सफलताओं के फलस्वरूप देखा गया। तीसरी अवस्था ने नारीत्व को नए सिरे से परिभाषित किया जो सशक्त था, उनकी (महिलाओं की) लैंगिकता उनके नियंत्रण में थी और स्वत्वसूचक थी। इसके अतिरिक्त, तृतीय लहर की सूक्ष्म राजनीति की स्पष्ट अभिव्यक्ति में जिसने योगदान दिया, यह बीसवीं सदी के उतरार्ध की इंटरनेट क्राँति थी। इंटरनेट ई-मेगेज़ीन (पत्रिकाओं) के रूप में केवल-महिलाएँ स्थल उपलब्ध कराया जो नारीवादी विचारों के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण मंच बने। इंटरनेट ने महिलाओं को विकासशील विश्व की महिलाओं और अश्वेतज महिलाओं के साथ एकजुटता को अभिव्यक्त करने में भौगोलिक सीमाओं पर काबू पाने में सहायता की। इस प्रकार, तृतीय लहर का राजनीतिक उपागम अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में अधिक समावेशी बहुसांस्कृतिक और वैश्विक था। इसका अनुप्रस्थ राजनीतिक नारीवादी सिद्धांत इस तर्क पर आधारित था कि जाति सजातीयता लैंगिक अभिविन्यास वर्ग इत्यादि का अपनी व्यक्तिपरक स्थिति की गतिशीलता के रूप में अनुष्ठान किया जाना चाहिए। यह इस अवस्था के दौरान विकसित बहुल राजनीतिक विचारधाराओं के रूप में अनुगूंजित हुई – सांस्कृतिक नारीवाद ब्लेक या अश्वेत नारीवाद और उत्तर आधुनिक नारीवाद।

6.4.1 सांस्कृतिक नारीवाद

सन् 1975 तक रैडिकल नारीवाद के स्थान पर सांस्कृतिक नारीवाद आ गया। सांस्कृतिक नारीवादी अपने रैडिकल समकक्षों के विचारों से ग्रहण भी करते हैं और उनसे हट (अलग) भी जाते है। वे रैडिकल नारीवादियों से सहमत हैं कि महिलाओं की स्वतंत्रता का प्रारंभ परपीड़ित कामुकता के अरचीकरण से होता हैं परन्तु वे भौतिक यथार्थ या वास्तविकता को अपने अनुभव की परिधि में ढ़केल देते है। जबकि रैडिकल नारीवादियों ने नारी शरीर को एक बाधा के रूप में देखा, जेन एलपर्ट एड्रियन रिच आदि जैसे सांस्कृतिक नारीवादियों ने महिलाओं के उद्भिज शरीर को एक प्रबल संसाधन के रूप में देखा। पितृसतात्मक व्यवस्था

द्वारा अभिज्ञान किया गया नारीवाद जिसमें आज्ञाकारित। दब्बूपन और वश्यता के आदर्श हैं और नारीप्रकृति के स्वाभाविक लक्षण जिन्हें वे स्नेहमय अनुरक्षक और समतावादी के रूप में देखते हैं, इन दोनों के बीच रॉबिन मोर्गन ऐंड्रिया द्वोरकिन तथा फ्लोरेन्स रश जैसे सांस्कृतिक नारीवादी अन्तर स्थापित करते हैं। दूसरी ओर, पुरुषत्व को अमिट के अर्थ में लेने के साथ सांस्कृतिक नारीवादी, महिलाओं के उत्पीडन का संपूर्णदोश पुरुषों की कल्पित मर्दानगी या नरजातीयता पर मढ़ देते हैं और पितृसतात्मक प्रणाली के भीतर (अन्दर) की शक्ति गतिकी पर इतना नहीं। इस प्रकार, सूजन ब्राउन मिल्लर के लिए बलात्कार पुरुष जीव विज्ञान का कृत्य या कार्य है। अन्त में, सांस्कृतिक नारीवादी लैंगिक अन्तर या जेंडर के अन्तर के बचाव की माँग करते हैं, चूकि, उनके अनुसार स्नेह, पोषण और समानता के स्त्रीजातीय मूल्यों में संस्कृति की पुनर्स्थापना होने पर ही समाज में क्रांतिकारी बदलाव लाया जा सकता है। स्त्रीजातीय मूल्यों के ताल के माध्यम से नारीवाद की व्याख्या करते हुए सांस्कृतिक नारीवादियों ने राजनीतिक सिद्धांत के स्थान पर एकजुट या संयुक्त भगिनीत्व के अपने दर्शन को स्थापित किया।

6.4.2 अश्वेत नारीवाद

संयुक्त राज्य अमेरिका में जहाँ एक ओर महिला मुक्ति और अश्वेत मुक्ति आन्दोलन तीव्र गति से बढ़ रहे थे, वहीं ब्लैक महिलाओं को नहीं लगा कि इन दोनों में से किसी ने भी उनका राजनीतिक प्रतिनिधित्व किया हो। महिला मुक्ति आन्दोलन ने मूल रूप से मध्यवर्गीय श्वेत महिलाओं पर ध्यान केन्द्रित किया जबकि दूसरे आन्दोलन में अश्वेत या ब्लैक का अर्थ केवल ब्लैक या अश्वेत पुरुष रहा। इस प्रकार अश्वेत या ब्लैक महिलाएँ एक अदृष्य वर्ग बनी रही थीं और अश्वेत मुक्ति आन्दोलनों के भीतर भी व निरंतर सेक्सिज़्मया लिंगभेद की अधीनता का शिकार बनी रहीं। इसकी प्रतिक्रिया के रूप में अश्वेत या ब्लैक नारीवादी आन्दोलन का, एक पृथक आन्दोलन के रूप में, विकास हुआ। इस आन्दोलन का उद्देश्य इस विषय को संबोधित करना था कि किस प्रकार वर्ग, जाति और जेंडर प्रतिच्छेदन द्वारा इन महिलाओं को अपने उत्पीडन का अनुभव कराते हैं और साथ ही, इसके विरूद्व एक कार्ययोजना का सुझाव देना भी था। ऐलिस वॉकर ने ब्लैक या अश्वेत नारीवादी आन्दोलन का वर्णन करने के लिए "वुमनिस्ट" शब्द का नामकरण किया। उनका तर्क है कि एक नारीवादी के लिए वुमनिस्ट वैसे ही है जैसे लैंवेंडर (हल्का जामुनी रंग) पर्पल (जामुनी) के लिए है। इस आन्दोलन के माध्यम से जिन सिद्धांतों को प्रवर्तित किया गया, उनमें नारीत्व के सभी पहलुओं की अभिस्वीकृति और प्रशंसा, आत्मनिर्णय पर बल और महिलाओं व पुरुष, दोनों की समृद्वि के प्रति प्रतिबद्वता की स्थापना शामिल थी। इस प्रकार इस आन्दोलन ने महिलाओं की व्यक्तिगत क्षमता के विस्तार की माँग की और साथ ही मानवता की समृद्वि की भी परवाह की। इस आन्दोलन ने अपनी महिला सहभागियों को बड़े पैमाने पर समुदाय से जुडे रहने के लिए भी प्रोत्साहित किया। इस प्रकार अश्वेत या ब्लैक नारीवाद एक राजनीतिक संघर्ष था जिसका उद्देश्य किन्ही भी ब्लैक या अश्वेत महिलाओं द्वारा सामना किए जा रहे उत्पीडन का प्रतिरोध या विरोध करना था।

6.4.3 उत्तर आधुनिक नारीवाद

उत्तर आधुनिक नारीवाद अपने इस तर्क के साथ कि भाषा ही है जो जेंडर का निर्माण करती है, नारीवाद के अन्तर्गत या भीतर के पूर्व बहसों की तुलना में सबसे बृहद आकार का विचलन करते हैं। व जुडिथ बटलर की 1990 की कृति "जेंडर ट्रबिल" के तर्कों से प्रभावित हुए जिसमें वह जीव वैज्ञानिक लिंग और जेंडर के बीच वर्तमान में कायम अन्तर की समालोचना करती हैं, जिसे इससे पूर्व के नारीवादियों ने सामाजिक रूप से निर्मित माना

था। वे तर्क देती हैं कि "महिला" एक "अकेली खडी" श्रेणी नहीं है, उसकी उत्पति अनेक कारकों द्वारा वहन से होती है, जैसे वर्ग, जाति, सजातीयता और सेक्शुएलिटी। ऐसे कारक साथ मिलकर उस पहचान की व्याख्या करते हैं जिसे हम एक "महिला" कहते हैं। इस तर्क के आधार पर वे मानती हैं कि इनमें से कोई भी कारक महिलाओं के उत्पीडन के लिए अकेला जिम्मेदार नहीं है और न ही इनमें से किसी एक से निपटने से महिलाओं की अधीनता की समस्या का हल हो पाएगा। उनके लिए, जेंडर क्रियाशील है और उसे किसी द्विचर या बाइनरी के रूप में नही समझा जा सकता अर्थात वे शरीर की सामाजिक मानदंडों और भाषा से अविभाज्यता की ओर इशारा करती हैं। उदाहरण के लिए चिकित्सा पेशेवरों के पास अस्पष्ट जननांग वाले एक शिशु को शल्यक्रिया द्वारा एक ऐसी लडकी में परिवर्तित करने की क्षमता है जिसे एक "शुद्व" लडकी के रूप में सांस्कृतिक स्वीकृति दी जाती है। चिकित्सा के क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकीय हस्तक्षेपें ने यौन पुनर्निर्माण सर्जरी को भी एक वास्तविकता बना दिया है, जिसने पुरुष और स्त्री के बीच की सीमाओं को धुंधला करते हुए जेंडर की पूरी श्रेणी को लचीला बना दिया है। डोन्ना हेरअवे, मेरी जो फ्रुग आदि जैसे उत्तर आधुनिक नारीवादी यह तर्क देते हैं कि सभी महिलाएँ उत्पीडन के सामान्य अनुभवों में सहभागी नहीं होती। इस प्रकार, आजकल की महिलाओं के विषय में पहचान की राजनीति को समझने के लिए वे क्वीयर समलैगिक और ट्रॉंसजेंडर आदि श्रेणियों को चरम महत्व देते हैं।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) नारीवाद की तृतीय लहर का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

6.5 अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति "जेंडर अंधी" रही है और नारीवादी लेखन में सन् 1980 के दशक में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में असर दिखाना प्रारंभ किया। कुछ श्रेण्यग्रंथो या क्लासिक कृतियों में शामिल हैः जीन बेथके एल्शटेन की "वीमेन एण्ड वॉर" (1987), सिंथिया एन्लो का बनानास, बीचेस एण्ड बेसस', (1989) और जे.ऐन टिक्नर का 'जेन्डर इन इन्टरनेशनल रिलेशन्सः फेमिनिस्ट पर्सपेक्टिव्ज़ ऑन अचीविंग ग्लोबल सेक्यूरिटी'' (1992). नारीवादी विद्वानों ने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति केवल सुरक्षा, सतायुद्व और राज्यों के बारे में नही है, और ऐसा एक तरीका है जिसके द्वारा जेंडर वैश्विक राजनीति को आकार देता है। बार्बरा एहरेनराईश ने ध्यान दिलाया है "पुरुष युद्व करते हैं.... क्योंकि युद्व उन्हें मर्द बनाता है''। राज्य पर केन्द्रित सुरक्षा की यथार्थवादी अवधारणा से भिन्न, नारीवादी, अभाव और भय से मुक्ति पर केन्द्रि मानव सुरक्षा को महत्व देते हैं। युद्व को अपने आप में एक जेंडर्ड घटना या लैंगिक घटना के रूप में देखा जाता है, क्योंकि अधिकांश उच्च सैन्य पदों और राजनीतिक पदों पर पुरुषों का प्रभुत्व होता है। यह कुछ मिथकों का भी प्रभाव है कि असहाय महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के लिए मर्दाना पुरुष योद्धाओं की आवश्यकता होती है।" जीन एल्शटेन ने पुरुष को एक "सुन्दर आत्मा" के रूप में प्रस्तुत करने वाले मिथकों को विस्तार से संबोधित किया है। उन्होंने यह तर्क दिया है कि यह

विभाजन अयोधियों के रूप में महिलाओं की सामाजिक स्थिति और योद्वाओं के रूप में पुरुषों की पहचान को पुनर्निर्मित और सुनिश्चित करने में सहायता करती है। सिंथिया एन्लो ने तर्क दिया है कि बागानों में श्रमिकों के रूप में, राजनयिकों की पत्नियों के और सैनिक अड्डों में यौन कर्मियों या सेक्स वर्कर्स के रूप में महिलाओं के कार्य को वैश्विक राजनीति का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। जे.एन टिक्नर ने हेन्स मॉर्गेन्थो के यथार्थवाद के छः सिद्धांतों की आलोचना की और यह तर्क दिया कि राष्ट्रीय हित एक व्यापक विषय है जिसे केवल सता के संदर्भ में परिभाषित नहीं किया जा सकता। परमाणु युद्व और पर्यावरण पतन जैसे मुद्दों से निपटने के लिए प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहयोग की आवश्यकता है।

बोध प्रश्न 4

टिप्पणीः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) जे.ऐन. टिक्नर द्वारा यथार्थवाद की आलोचना का विवेचन करें

.....

.....

.....

.....

6.6 सारांश

इस इकाई में हमने मूलरूप से तीन महत्वपूर्ण बातों की चर्चा की है–

नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की उत्पति, इसके विकास की प्रधान लहरें या अवस्थाएँ/चरण और इन अवस्थाओं के अन्तर्गत जो महत्वपूर्ण वैचारिक धाराएँ विकसित हुई और नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के समेकन के प्रक्षेपपथ को प्रभावित किया। नारीवादी चिन्तन की प्रथम लहर का उदय सन् 1948 में न्यूयार्क में इस प्रमुख प्रेरणा के साथ हुआ कि महिलाओं को पितृसतात्मक समाज के दमनकारी तरीकों से मुक्त करने के लिए, महिलाओं को मताधिकार का हक प्राप्त होना चाहिए। परन्तु, द्वितीय लहर के समर्थकों ने प्रचलित या मौजूदा राजनीतिक विचारों को सिमित मानते हुए उनकी समालोचना की और महिलाओं के अधिकारों की राजनीति का विस्तार उनके घरेलू जीवन के निजी क्षेत्र तक किया। ये तर्क दिया गया कि महिलाओं को शिशु वाहक, शिशु पालक और गृहिणी की नियंत्रित भूमिकाओं से मुक्ति की आवश्यकता है। इसका समाधान रोजगार बाजार में महिलाओं के लिए आर्थिक अवसरों की उपलब्धि में देखा गया। यद्यपि प्रथम लहर के नारीवादी सक्रियतावादी अपनी माँगों में इतने गतिशील नहीं थे, द्वितीय लहर वालों ने नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत के मोर्चे को रैडिकलाइज़ किया। उन्होंने एक ओर महिलाओं का दबंग के रूप में प्रक्षेपण या प्रस्तुत किया और दूसरी ओर इन्होने नारी शरीर को लैंगिक पितृसतात्मक ताकतों के हाथों उत्पीडन के एक प्रधान उपकरण के रूप में देखा। इसने समर्थकों को उलझा दिया। इन समर्थकों ने नारीवाद की तृतीय लहर को उत्पन्न किया। उन्होंने तर्क दिया कि महिलाओं के पास दोनों का होना संभव था – बुद्धि या मस्तिष्क और पुशअप ब्रा। इसके साथ रैडिकल नारीवाद ने सांस्कृतिक नारीवाद के लिए मार्ग प्रशस्त किया जिसने अश्वेत महिलाओं और विकासशील विश्व की महिलाओं को अपने आन्दोलनों में निमग्न (घेर) किया। इस प्रकार उस समय के विभिन्न आन्दोलनों के बीच राजनीतिक संलाप या वार्तालाप का उन्होंने विस्तार किया। जबकि, नारीवाद की द्वितीय लहर को उदारवादी, मार्क्सवादी, समाजवादी,

रैडिकल और पारिस्थितिक नारीवाद के राजनीतिक विचारों द्वारा प्रस्ताविक किया गया तृतीय लहर, सांस्कृतिक, ब्लैक या अश्वेत और उत्तर आधुनिक नारीवाद द्वारा अंक्ति की गई। उदारवादी नारीवादी जेंडर समानता (लैंगिक समानता) के विचार को सार्वजनिक क्षेत्र में पहली बार उन्नीसवीं सदी में लेकर आया। इन्होंने महिलाओं की मुक्ति को प्राप्त करने के लिए राज्य की भूमिका को, महिला आन्दोलन के एक मित्र के रूप में देखने की माँग की। रैडिकल नारीवादियों ने महिलाओं की मुक्ति की राजनीति को वैयक्तिक स्तर पर पहुँचाया और नारीवादी राजनीतिक सिद्धांत की गति को स्थूल से सूक्ष्म संभाषण में परिमित किया। सांस्कृतिक नारीवादियों ने सार्वभौमिक भगिनीत्व की माँग की और भिन्न रंग, सजातीयता, लैंगिक अभिविन्यास और वर्गों की महिलाओं को मुक्ति के सामान्य लक्ष्य के लिए एकजुट करने को प्रयास किया। इसमें, किसी भी अश्वेतज महिला द्वारा सामना किए जाने वाले उत्पीडन से जूझने के लिए अश्वेत नारीवाद एक राजनीतिक संघर्ष था। उत्तर आधुनिक नारीवादी क्वीयर समलैंगिक और ट्रॉसजेंडर आदि श्रेणियों को आजकल की महिलाओं से संबंधित पहचान की राजनीति को समझने के लिए अत्यन्न महत्वपूर्ण मानते हैं।

6.7 संदर्भ

फ्रीडन, बेदशी, *द फेमिनिन मिस्टीक,* न्यू यॉर्क, डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एण्ड को., 1963

द बोउवार, सिमोन, *द सेंकड सेक्स,* लंदन, विंटेज हाऊस, 1949

मिल्लेद, केट, *सेक्शुअल पॉलिटिक्स,* न्यू यॉर्क, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969

डेली, मेरी, *गाइन/इकॉलजी,* बॉस्टन, बीकन प्रेस, (1978 (1990))

बैरी, कैथलिन, *फीमेल सेक्शुअल स्लेवरी,* एंगलवुड क्लिफ्स, प्रेंटिस हॉल, 1979

हेवुड, ऐंड्रू, *ग्लाबल पॉलिटिक्स,* हैंपशायर, पॉलग्रेव मेक्मिल्लन, 2011

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उतर में निम्नलिखित बिन्दुओं पर बल दिया जाना चाहिए

- सेनेका फॉल्स उद्घोषणा (1848)
- महिला मताधिकार पर कल (उसके लिए किए गए संघर्ष समेत)
- गैर-पाश्चात्य विश्व में स्थिति

बोध प्रश्न 2

1) आपके उतर में उदारवादी, मार्क्सवादी, समाजवादी, रैडिकल और ईकोलॉजिकल या पारिस्थितिक नारीवाद की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख होना चाहिए।

2) आपके उतर में सास्कृतिक, ब्लैक (अश्वेत) और उत्तर आधुनिक नारीवाद की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख होना चाहिए।

बोध प्रश्न 3

1) सांस्कृतिक नारीवाद, अश्वेत तथा उत्तर–आधुनिक नारीवाद पर प्रकाश डालें।

बोध प्रश्न 4

1) टीक्नर द्वारा मोगेन्याऊ के सिद्धांतों की आलोचना का ज़िक्र करें।